بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 19.09.25

# ताएँफ़ नामक युद्ध के परिवेश में
# नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का बयान।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (तबूक तिथि 19,1404 हश)19 .09. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बों में ताएँफ़ की जंग का वर्णन हो रहा था, उस अवसर पर एक सहाबी जो उनसे बात करने के लिए गए थे और ताएँफ़ वालों ने इस बात का आश्वासन भी दिया था कि उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा, परन्तु जब वे क़िले के निकट गए तो वादा तोड़कर उन्हें शहीद कर दिया गया, किन्तु इसके बावजूद आँहज़रत ﷺ ने सन्धि करने के प्रयास को नहीं छोड़ा और बात चीत का क्रम जारी रखने के लिए हज़रत हँज़ला रज़ी. को भिजवाया। ताएँफ़ वाले उन पर भी झपट पड़े तो आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि कौन है जो हँज़ला को बचाकर लाए? इस पर हज़रत अब्बास रज़ी. गए और उन्हें आक्रमणकारियों से बचाते हुए ले आए।

ताएँफ़ वालों तथा क़ुरैश के चूंकि पुराने तथा मधुर सम्बन्ध थे, इस कारण से समझौते के लिए हज़रत अबू सुफ़यान बिन हरब रज़ी. एवं हज़रत मुगेरा बिन शअबा रज़ी. क़िले के अन्दर गए, किन्तु वे सफल न हो सके, परन्तु क़िले के लोगों ने यह अनुरोध किया कि मुहम्मद ﷺ से कहें कि हमारे बागों को हानि न पहुंचाएं, अल्लाह के लिए तथा रिश्तेदारी के लिए उन्हें वैसे ही रहने दिया जाए। आँहज़रत ﷺ ने उनकी प्रार्थना पर बागों के नष्ट करने का आदेश वापस ले लिया। यह आँहज़रत

ﷺ के सुन्दर जीवन चरित्र का ऐसा शानदार नमूना है कि आप स. ने ख़ुदा का वास्ता दिए जाने पर वह आदेश वापस ले लिया जो युद्ध का नक़शा बदल सकता था। इस अवसर पर आप स. ने यह एलान करवाया कि जो गुलाम क़िले की दीवारों से उतर कर हमारे पास आ जाएगा, वह आज़ाद होगा। इस पर 23 गुलाम क़िले से उतर कर आप स. के पास आ गए, क़िले वाले इस पर बड़े दुखी हुए। आँहज़रत ﷺ ने इन सब गुलामों को आज़ाद करके एक एक मुसलमान के हवाले किया और उस गुलाम के संरक्षण का दायित्व उन मुसलामानों पर डाला। आप स. ने यह नसीहत भी फ़रमाई कि उनको अच्छी तरह शिक्षित किया जाए।

एक अवसर पर उयीनिया बिन हिस्न फ़ज़ारी ने रसूलुल्लाह ﷺ से अनुमति चाही कि वे किले के अन्दर जाकर बनू सकीफ़ को इस्लाम की दावत दें। (उयीनिया बिन हिस्न मक्का पर विजय से पहले इस्लाम लाया था, उसके विषय में आता है कि नबी अकरम ﷺ ने उसको अलअहमक़ मुताअ फ़रमाया था, अर्थात ऐसा लीडर एवं मार्गदर्शक है जो मूर्ख है) आज्ञा मिलने पर उयीनिया क़िले में उन लोगों के पास पहुंचा तथा इस्लाम की दावत देने के बजाए बनू सकीफ़ को इस्लाम के विरुद्ध और अधिक भड़काया और वापस आकर केवल झूठ बोला। अल्लाह तआला ने आप ﷺ को इस विषय में व्हयी के माध्यम से सूचना दे दी थी कि वहाँ क्या कह कर आया है। आँहज़रत ﷺ ने घेराव हो जाने के कारण हज़रत नौफ़िल बिन मआविया रज़ी. से विचार विमर्श किया तो उन्होंने निवेदन पूर्वक कहा कि यह तो ऐसा ही है जैसे लोमड़ी अपने भट में घुस गई हो, उस पर खड़े रहेंगे तो पकड़ लेंगे, और छोड़ देंगे तो वह हानि कारक नहीं। इस पर आप स. ने घेराव हटाने का निश्चय फ़रमा लिया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ऐसा लगता है कि यह बात केवल सुझाव पर नहीं, बल्कि ख़ुदा की ओर से भी कोई विशेष मार्ग-दर्शन अथवा संकेत मिला था, अन्यथा आँहज़रत ﷺ के युद्ध अभियानों में यह पहला अवसर था कि आप स. इतने महत्त्व पूर्ण अभियान को प्रत्यक्षतः अधूरा छोड़ कर जा रहे थे। इसके अंतर्गत आँहज़रत ﷺ के एक सपने का भी वर्णन मिलता है, जो आप स. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को सुनाया था। आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया- मैंने देखा कि एक बर्तन में मक्खन मेरे पास आया, फिर एक मुर्गे ने चोंच मर कर उस बर्तन को गिरा दिया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि मेरे विचार में आप स. सकीफ़ वालों से जो चाहते हैं वह इस अवसर पर प्राप्त नहीं कर सकेंगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने भी इस उत्तर का समर्थन किया।

जब घेराव हटाने की घोषणा हुई तो कुछ उत्साहित युवाओं की प्रतिक्रिया यह थी कि हम विजय प्राप्त करने के बिना क्यूं लौट रहे हैं? पहले ये लोग हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. के पास गए कि वे हुज़ूर ﷺ की सेवा में निवेदन करें कि विजय मिलने तक घेराओ किया जाए। परन्तु जब इन दोनों ने इन्कार किया तो ये नौजवान स्वंय रसूलुल्लाह ﷺ के पास उपस्थित हुए और अति भावुक स्वर में निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह ﷺ! हम लड़ेंगे। आप स. ने फ़रमाया- ठीक है, कल सुबह लड़ो। अगली सुबह उन्हें घाव लगने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिला। इस पर आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि कल सुबह हम वापस रवाना होंगे, इस पर उन युवाओं ने भी प्रसन्नता प्रकट की। उनके विचारों में बदलाव देख कर रसूलुल्लाह ﷺ भी मुस्कुरा दिए।

इस युद्ध में काफ़िरों के तीन लोगों की हत्या हुई, परन्तु उनके ज़ख़्मियों एवं अन्य मारे गए लोगों की संख्या का वर्णन नहीं मिलता, क्यूंकि ये लोग क़िले में रहे। इसी प्रकार मुसलामानों के ज़ख़्मियों की भी सटीक संख्या पता नहीं चलती परन्तु हज़रत अबू सुफ़यान रज़ी. और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी बकर रज़ी. के ज़ख़्मी होने का वर्णन मिलता है। इस युद्ध में बारह सहाबी शहीद हुए जिनके नाम इस प्रकार हैं- हज़रत सईद बिन आस रज़ी, हज़रत अर्फ़ता बिन जनाब रज़ी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या रज़ी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ी, हज़रत साइब बिन हारिस रज़ी. और उनके भाई अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ी, हज़रत जलीहा बिन अब्दुल्लाह रज़ी, हज़रत साबित बिन जला रज़ी, हज़रत सुहैल बिन असहल रज़ी, हज़रत मुन्ज़िर बिन अब्दुल्लाह रज़ी. हज़रत रक़ीम बिन साबित रज़ी. और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ी. जो बाद में मृत्यु को प्राप्त हुए थे। इस युद्ध में आँहज़रत ﷺ की दो पवित्र पत्नियां हज़रत उम्मे सलमा रज़ी, और हज़रत ज़ैनब रज़ी, साथ थीं, इन दोनों के लिए दो तम्बू लगवाए गए थे। आँहज़रत ﷺ इन दोनों तम्बुओं के बीच में नमाज़ अदा फ़रमाते थे। आँहज़रत ﷺ ने ताएँफ़ का कितने दिनों तक घेराव रखा, इस संदर्भ में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं जिनमें दस से लेकर चालीस रातों का वर्णन है।

रवानगी के समय आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि यह पढ़ते हुए लौटो कि हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं तथा अपने रब की प्रशंसा करने वाले हैं। आप स. से निवेदन किया गया कि या रसूलुल्लाह ﷺ! बनू सकीफ़ के लिए बद-दुआ करें। आप स. के विशाल ह्रदय की ऐसी दशा थी कि बद-दुआ के बजाए आप स. ने उनके लिए यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! सकीफ़ को हिदायत दे, और उन्हें मुसलमान बना कर ले आ। इसके बाद जब आप स. वापसी के लिए रवाना हुए तो यह दुआ फ़रमाई- ऐ अल्लाह! इन्हें हिदायत दे और इनकी सप्लाई एवं युद्ध सामग्री की उपस्थति में तू हमारे लिए काफ़ी हो। आँहुज़ूर ﷺ का मूल उद्देश्य तो यह था कि भूली भटकी जनता अल्लाह तआला की ओर आए, अतः अल्लाह तआला ने आप स. की यह दुआ इस प्रकार स्वीकार फ़रमाई कि अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि यही ताएँफ़ वाले रमज़ान 9 हिजरी में सब के सब मुसलमान हो गए।

हुनैन नमक युद्ध में माले ग़नीमत दिए जाने का भी वर्णन मिलता है, आप स. के निर्देश पर उन गुलामों के निवास के लिए जिनकी संख्या छ: या आठ हज़ार थी, अस्थाई निर्माण करवाए गए ताकि सर्दी गर्मी की तेज़ी से बचाओ हो सके। माले ग़नीमत में 24 हज़ार ऊँट, चालीस हज़ार से अधिक भेड़ बकरियां, चार हज़ार ओकिया चांदी जो लगभग 490 कि.ग्रा. बनती है, प्राप्त हुआ। इससे पहले मुसलमानों को कभी इतना अधिक माले ग़नीमत नहीं मिला था। ऐसे अवसर पर भी आप स. को अपने सहाबियों की तरबियत का इतना ध्यान था कि आप स. माले ग़नीमत को बांटने से पहले एलान फ़रमाया कि इस माल में से ख़ुम्स (पांचवां भाग) के अतिरिक्त मेरा हिस्सा भी वही है जिसका तुममें से हर कोई अधिकारी है और ख़ुम्स भी अतंतः तुम्हारे पास ही लौट आएगा। फिर आप स. ने फ़रमाया कि सूई तथा उसका धागा अथवा इससे भी छोटी कोई चीज़ किसी के पास है तो वो वापस कर दे, फ़रमाया- ख़यानत से बचो, क्यूंकि क़यामत के दिन ख़यानत करने वाले के लिए यह काम एक

लज्जात्मक एवं धब्बा साबित होगा। यह सुन कर एक सहाबी ऊँट के बालों से बनी हुई रस्सी का एक गोला लेकर आप स. की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि मैंने फटी हुई ज़ीन सीने के लिए धागा माले ग़नीमत में से ले लिया था।

इसी प्रकार एक एक अन्य सहाबी उपस्थित हुए जिन्होंने माले ग़नीमत में से एक सूई लेकर अपनी पत्नी को दी थी, वे एलान सुन कर तुरन्त अपनी पत्नी के पास गए और सूई वापस लेकर माले ग़नीमत में रख दी। आँहज़रत ﷺ ने माले ग़नीमत बांटने में दिलों को मोहने वाली शैली अपनाते हुए सबसे पहले क़बीलों के मुख्याओं एवं सरदारों को माले ग़नीमत प्रदान किया। ये सरदार अपने अपने क़बीलों में प्रतिष्ठा एवं आदर रखने वाले लोग थे। आप स. ने इन्हें सौ सौ और पचास पचास ऊँट प्रदान किए।

इसके बाद आँहज़रत ﷺ ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. से फ़रमाया कि वे शेष लोगों को भी बुला लें। फिर आप स. ने सब लोगों में माले ग़नीमत बाँट दिया। हर एक के हिस्से में चार ऊँट अथवा चालीस बकरियां आईं। आँहज़रत ﷺ ने क़ुरैश को माले ग़नीमत देने का एक कारण बयान करते हुए फ़रमाया कि मैं क़ुरैश को देकर उनके दिलों को शांत करने का प्रयास कर रहा हूँ क्यूंकि इन्हें कुफ़्र से सम्बन्ध विच्छेद किये हुए अभी अधिक समय नहीं हुआ। इस अवसर पर कुछ मुनाफ़िकों ने माले ग़नीमत के आवंटन पर आपत्ति भी जताई तथा आरोप भी लगाया कि नऊज़ुबिल्लाह आप स. ने माले ग़नीमत देने में न्याय से काम नहीं लिया, और न ही अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार काम किया है। आँहुज़ूर ﷺ ने जब यह सुना तो आप स. का चेहरा लाल हो गया और आप स. ने फ़रमाया कि यदि अल्लाह और उसका रसूल भी न्याय से काम नहीं लेगा तो कौन है जो ईमानदारी एवं न्याय करे। इसके बाद आप स. ने फ़रमाया कि अल्लाह मेरे भाई मूसा पर रहम करे, उन्हें इससे भी बड़े कष्ट दिए गए और उन्होंने धैर्य से काम लिया।

इसके बाद एक व्यक्ति खड़ा हुआ और उसने भी इस आवंटन पर आपत्ति प्रकट की तो आप स. ने फ़रमाया- तेरा बुरा हो, यदि मेरे पास भी न्याय नहीं तो फिर किसके पास है। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. खड़े हुए तथा निवेदन किया कि यदि आदेश हो तो अभी इसकी गर्दन उड़ा दी जाए। आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया- नहीं। आँहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि ख़ालिद! मझे यह आदेश नहीं दिया गया कि मैं लोगों के दिल चीर कर अथवा सीनों को काट कर देखूं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

**18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब**